आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 371 ARYA SABHA MAURITIUS *5th Aug. to 12th Aug 2017*

Arya Bhawan, 1 Maharshi Dayanand St., Port Louis, Tel : 2122730, 2087504, Fax : 2103778, Email ID : aryamu@intnet.mu

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् ।। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।।

ऋग्वेद १०/१९०/२

शब्दार्थ :- **अर्णवात्** - जलीय, **समुद्रात्** - आकाशस्थ समुद्र से, **सम्वत्सरः** - काल की गति अथवा काल का मान-दण्ड सूर्य, **अध्यजायत** - उत्पन्न होता है, **सम्वत्सरः** - जो भाग प्रकाशमान है, वह सम्वत् है। जो नहीं प्रकाशमान है, वह सर है। अतः आदित्य भी सम्वत्सर है, **मिषतः** - निमेष आदि को प्राप्त जंगम तथा जड़, **विश्वस्य** - जगत् का, **वशी** - स्वामी परमेश्वर, **अहो रात्राणि** - दिन और रात्रि के भेद को, **विदधत्** - बनाता है ।

भावार्थ :- *उस आकाशीय समुद्र से काल की गति उत्पन्न होती है, जगत् को वश में रखने वाला प्रभु दिन और रात्रि के भेद को बनाता है ।* (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

Om Samudrādarnavādadhi Samvatsaro Ajāyat.
Ahorātrāṇī Vidadhad Vishwasya Mishato Vashi.

Rigved 10/190/2

Meaning of words :- **Samudrat** - from the ocean, **arnavat** - water found in the sky, **adhi** – after, **samvatsarah** - year, time, moment, etc., **ajāyata** - created, produced, **ahorātrāni** - day and night, **vidadhat** - having created, **vishwasya** - to the universe, **mishatah** - together with inmate nature, **vashi** - God who keeps everything under this control.

Purport -- *Once He filled the oceans He had created with water from the sky, God segregated time into moment, day and night, and kept everything under His control.*

Explanation :-- The Vedas state that there are three eternal entities - God, the soul and the Primordial matter - Prakriti. 'Prakriti' is inert. God activates it. Almighty God transforms this 'Prakriti' into various elements like earth, ether, air, water and fire for the benefit of the soul. He keeps watch over and controls everything.

Dr O.N. Gangoo

आर्यसमाज के अधिकारियों से विनम्र निवेदन

सभी आर्यसमाजों के प्रधानों, मंत्रियों और सदस्यों को विदित हो कि आर्यसभा ने पाई स्थित 'ऋषि दयानन्द संस्थान' में एक विशाल पुरालेखागार (archives) की स्थापना की है ।

इस अभिलेखागार की स्थापना का उद्देश्य है- मॉरीशस में आर्यसमाज से सम्बन्धित अभिलेखों (documents) और विशेष समाज-सेवकों के चित्रों को सुरक्षित रखना ।

आर्यसमाज के अधिकारियों से विनम्र निवेदन किया जाता है कि वे निम्नलिखित जानकारियाँ निम्न पत्ते पर भेजने का कष्ट करें :–

१. अपने समाज की स्थापना-तिथि
२. संस्थापकों के नाम
३. आरम्भ से अब तक के विशेष समाज-सेवकों का परिचय
४. अपने समाज में अबतक हुई विशेष गतिविधियाँ
५. ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित विवरण
६. आपके समाज की आरम्भ से अब तक की विवरण-बहियों की एक-एक प्रति
७. आपके समाज के विशेष सेवक-सेविकाओं के चित्र
८. विशेष घटनाओं के अवसरों पर लिये गये चित्र
९. हिन्दी पाठशालाओं के छात्र-छात्राओं और अध्यापक-अध्यापिकाओं के चित्र
१०. कोई अन्य आवश्यक सामग्री

पूर्णाशा है कि आप इस निवेदन पर यथोचित ध्यान देने की कृपा करेंगे ।

APPEAL TO MEMBERS & WELL-WISHERS

Arya Sabha Mauritius is currently setting up its archives at the Rishi Dayanand Institute at Pailles to safeguard documents, photographs and other records for posterity.

We humbly appeal to the officials and members of Arya Samajs, Arya Mahila Samaj, Yuvak & Yuvati Sanghs and well-wishers to forward, at their earliest convenience the following:

- Date of establishment of the Samaj
- Names of founder members
- Brief history & photos of those who had an outstanding contribution to the Samaj
- Brief on special events & photos held by the Samaj since its foundation
- A copy of the records of the minutes of proceedings of Samaj
- Records & photos of Hindi schools, students and teachers
- Other relevant materials.

Documents and photos should be handed over to :

Mrs Reshma Sookar
Rishi Dayanand Institute
Michael Leal Avenue, Pailles
(Tel. 5760 1105; 286 1159)

We await your prompt collaboration and response.

Thanking you

Dr. O.N. Gangoo
President, Arya Sabha Mauritius

सम्पादकीय

प्रेमोत्सव

प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करना हमारा परम कर्त्तव्य है। हम एक दूसरे के प्रेम और सहयोग से जीने वाले प्राणी हैं। अकेला जीवन व्यतीत करना हमारे लिए बड़ा ही कठिन है। प्रेम-भाव एक दूसरे को जोड़ता है। एक सुदृढ़ परिवार का गठन प्रेम द्वारा ही होता है। आपसी प्रेम और सहयोग से घर-परिवार की रौनक बढ़ती है और पास-पड़ोस के लोग उस परिवार की प्रशंसा करते हैं।

प्रेम के बन्धन में जीने वाले व्यक्ति सदा आनन्दित रहते हैं और अन्यों को भी आनन्दित कर देते हैं। अपने अद्भुत प्रेम से एक प्रेमी अपने शत्रु को भी मित्र बना लेता है और हत्यारों का मन द्रवीभूत कर देता है। हिंसक पशु को भी प्रेम-जाल में फाँस लेता है। वह प्रेम मधु का पान कराकर सबका जीवन मधुमय बना देता है।

प्रेमभावना उत्पन्न होने से सुख, शान्ति और आनन्द का वातावरण उत्पन्न हो जाता है। मन प्रफुल्लित हो उठता है। प्रेम-रंग चढ़ जाने से हृदय में तरह-तरह की उमंगें उठती हैं। कंधे से कंधा मिलाकर सुखमय जीवन व्यतीत करने की किरणें जाग उठती हैं। प्रेम-बन्धन से परिवार, पड़ोसी, सखा सम्बन्धी, समाज और समस्त देशवासियों का जीवन मंगलमय हो जाता है।

रक्षा-बन्धन एक प्रेमोत्सव है। भाई-बहनों के लिए एक अति पावन पर्व है। एक दूसरे की रक्षा हेतु शपथ लेने का महोत्सव है। आपसी प्रेम-भाव प्रकट करने का त्योहार है। भाई-बहनों में खून का रिश्ता होता है। उनमें बचपन ही से अटूट प्रेम रहता है। एक-दूसरे के सुख-दुख, शोक-आनन्द में साथ देने का नाता होता है, इसीलिए अपना अटल प्रेम प्रकट करने के लिए बहनें रक्षा-बन्धन के अवसर पर अपने भाइयों की कलाई में राखी बाँधने आती हैं। भाई-बहन का यह त्योहार एक दूसरे की रक्षा करने की भावना जागरित करता है।

इस प्रेमोत्सव में सभी भाई-बहन यही वचन देते हैं कि वे जीवन पर्यन्त एक-दूसरे के सुख-दुख में भागीदार होंगे ।

आज हमारे बहुत से युवक-युवतियाँ सत्संग के अभाव में अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों में फँसे हुए हैं। कितने लोगों का झुकाव नशेबाजी जूआखोरी की ओर है तो अनेक जवान मादक द्रव्यों का शिकार हो रहे हैं और कई नादान युवक दुराचारी, व्यभिचारी और हिंसक होते जा रहे हैं, जिन कारणों से भाई-बहनों का प्रेम घटता जा रहा है। उधर कितनी बहनें घरेलू हिंसा (Domestic Violence) से पीड़ित हैं, ऐसी दयनीय स्थिति में भाई-बहन एक-दूसरे की पूरी रक्षा करने में असमर्थ हैं। कितनी कन्याएँ प्रीतम की प्रेम जाल में फँसकर गैर हिन्दू के साथ हमेशा के लिए चली जा रही हैं। इन कारणों से प्रेम का बन्धन टूट रहा है ।

विज्ञान के इस प्रगतिशील युग में हमारे हज़ारों युवक-युवतियाँ ग़ैर धर्म में प्रवेश कर रहे हैं। वे अपने धर्म, संस्कृति, सभ्यता और भाषा आदि से मुँह मोड़ चुके हैं। खून का रिश्ता होने पर भी वे रक्षाबन्धन त्योहार नहीं मनाते हैं। ऐसी गम्भीर स्थिति में सभी भाई-बहनों का कर्तव्य हैं कि वे एक-दूसरे की रक्षा करने हेतु प्रयत्न करें, अन्यथा हमारे परिवारों में दरारें पैदा होने से अनेक संगठित, संस्कारी और प्रशंसनीय परिवार बिगड़ते जाएँगे।

प्रेमोत्सव 'रक्षा-बन्धन' के उपलक्ष्य में हमारी यही अभिलाषा है कि बिछड़े हुए भाई-बहनों में पुनः प्रेम उत्पन्न हो।

ईश्वर से विनती है कि हमारे सभी युवा वर्गों को जीने का सही रास्ता दिखाएँ, ताकि वे आर्य पुत्र-पुत्रियाँ वेदों के आधार पर अपने भावी जीवन को उज्ज्वल बनाने में सफलता प्राप्त करें ।

बालचन्द तानाकूर

वेद मास के परिप्रेक्ष्य में .....

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

आदिकाल से ऋषि-मुनियों ने वेद को ईश्वरीय-ज्ञान से अभिहित किया है । वेद ज्ञान को देशकाल, परिस्थिति और वर्ण तथा आश्रम विशेष की सीमा में बाँधकर रखा नहीं जा सकता। जैसे सूरज, चाँद, सितारे, पर्वत, झरने सभी के लिए हैं, उसी प्रकार वेद सभी के लिए है । यह ज्ञान भारत और भारतीयों का नहीं है। यह सार्वभौम है। वेद में कहीं भी किसी जाति विशेष का नाम नहीं आया है। सृष्टि के आरम्भ में जब परमपिता परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के पावन-पवित्र आत्मा को प्रेरित करके ज्ञान दिया था, तो आरम्भ के मानव किसी विशेष देशवासी नहीं कहलाते थे। उन्हें प्रेरणा प्राप्त हुई और वे अपने इर्द-गिर्द के लोगों को सुनाने लगे, जिस भाषा में उन लोगों ने सुनाया था, वह वैदिक संस्कृत भाषा थी। इसीलिए उस वैदिक संस्कृत को लौकिक संस्कृत की जननी कहते हैं और उसी लौकिक संस्कृत से संसार भर की तमाम भाषाएँ उत्पन्न हुईं। यह वैदिक ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी बोलकर और सुनकर सदियों तक परंपरागत चलती रही, तब-तक – जब-तक काग़ज़ की ईजाद हुई और आगे चलकर पुस्तकाकार में प्रकाशित हुआ। वर्तमानकाल में सही ढंग से वेदों को समझने में कठिनाई होने लगी तो देशी-विदेशी वेद का ज्ञान रखने वालों ने वेद भाष्य लिखने का प्रयास किया। पर वेद में जो ज्ञान है उस तक पहुँचने में उन सब की पहुँच नहीं हो पायी। भारत में वेद लुप्त हो जाने पर ग्रिफिस, विल्सन, डॉ० माक्स मूलर आदि मोडर्न विद्वानों ने बहुत हाथ-पाँव चलाये पर वे भी असफल रहे। अन्त में अद्वितीय सामाजिक और आध्यात्मिक सुधारक महर्षि दयानन्द ने जब यजुर्वेद पर भाष्य लिखकर दुनिया के सामने रखा तो सभी आश्चर्य चकित रह गए, क्योंकि उनको पता चल गया कि वे वेद-ज्ञान से कितनी दूर थे। स्वामी दयानन्द ने वेद भाष्य करके ऋषि का पद पाया।

ऋषि दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने कहा, 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना हर व्यक्ति का परम धर्म है। पिछली कई सदियों से वेद का पढ़ना-पढ़ाना एक वर्ण विशेष तक सीमित कर दिया गया था। सब तो सब लड़कियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था और ऊपर से कहा जाता था, **'मातृ-देवो भव....'** माता देवी कैसे कहलाती जब उन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं दिया जाता ।

इसलिए चक्षुहीन गुरु विरजानन्द ने अपने श्रेष्ठतम शिष्य दयानन्द को गुरुकुल से दीक्षा देने से पहले कहा, 'दयानन्द, भारत सभी दृष्टि से अंधकार के गर्त्त में गिर पड़ा है, उसे जाकर जगाओ और इस प्रक्रिया में वेद ज्ञान से काम लो। स्वामी दयानन्द, गुरु का संदेश समझ गए और उन्होंने जाते ही वेदों के प्रचार का उपक्रम जारी किया। जब उन्होंने देखा कि एकाएक वेद का प्रचार करना कठिन है तब उन्होंने पहले वाणी से काम लिया, फिर पाणी से। पहले उपदेश देना आरम्भ किया और पश्चात् लेखन द्वारा। वेदों को समझाने के लिए उन्होंने सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन किया, आर्यसमाज की स्थापना की और अन्त में वेदों पर भाष्य लिखना आरम्भ किया। इन सबका माध्यम – 'भाषा' याने देव भाषा हिन्दी को बनाया। फिर एक बार अपने 'ऋषि' होने का प्रमाण सिद्ध किया। वे प्रथम व्यक्ति हुए जिन्होंने कहा कि भारत की एक भाषा होगी और वह हिन्दी होगी।

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

त्रिदिवसीय यज्ञ

श्रावणी महोत्सव के उपलक्ष्य में बोबासें आर्यसमाज ने आर्यसभा मोरिशस के तत्वावधान में और प्लेन विलियेम्स आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से अपने आर्य मंदिर में त्रिदिवसीय श्रावणी महोत्सव मनाने का आयोजन किया था।

शुक्रवार दि० १४ जुलाई को सायंकाल ३.३० बजे से ६.३० बजे तक यज्ञ के बाद आर्यसभा के उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर के सन्देश के साथ कार्य सम्पन्न हुआ।

शनिवार दि० १५.०७.२०१७ का कार्य यज्ञ से आरम्भ हुआ। तत्पश्चात् डॉ० अल्का धनपत जी का सारगर्भित संदेश हुआ, जिसे सुनकर उपस्थित भक्तों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा ।

रविवार दि० १६ जुलाई को प्रातःकाल ८.३० बजे से लेकर १२.०० बजे तक कार्य चलता रहा जिसके अन्तर्गत आर्य सभा के महामंत्री सत्यदेव प्रीतम का भाषण हुआ। नित्यप्रति बारी-बारी से पंडित जीवन महादेव, पुरोहिता धनवन्ती लोकी एवं बासदेव चन्नू द्वारा यज्ञ हुआ, जिसके अन्तर्गत यजुर्वेद के चन्द अध्यायों का पाठ भी हुआ।

रविवार को सभी आगन्तुकों का भोजन से सत्कार किया गया ।

पचास साल हुए -

पचास साल पहले सन् १९६७ में श्री नन्देव नागा जी द्वारा दान में दी हुई ज़मीन में एक आर्य मंदिर के लिए शिलान्यास विधि की गई थी और एक छोटा आर्य मंदिर बना था। समय के साथ जब उस छोटे से मन्दिर ने समय के थपेड़ों की मार खाते-खाते जवाब दे दिया, तब वहाँ के समाज वालों ने उसका जीर्णोद्धार किया। उसी का पुणः उद्घाटन किया गया रविवार दि० २३ जुलाई को प्रातःकाल के ९.३० से १२.०० बजे तक ।

उस मौक़े पर वहाँ के पंडित-पंडिताओं द्वारा यज्ञ हुआ। तदुपरान्त भजन-कीर्तन श्री चमन एवं कोटक की मंडली द्वारा हुआ, जिसे उपस्थित लोगों ने खूब सराहा।

मौक़े के विशेष एवं मुख्य अतिथि माननीय राज दयाल और उप-उच्चायोग श्री अशोक कुमार थे। सभा की ओर से डॉ० उदयनारायण गंगू, सत्यदेव प्रीतम, श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, प्रभाकर जिऊत और दोमा जी थे।

कुछ लोगों को सम्मानित किया गया और मंदिर का नाम दिया गया – नन्देव नागा। उन्होंने ही अपनी ज़मीन दी थी। इस प्रकार वृजेवेरजियेर गाँव को एक नया आर्य मंदिर मिल गया।

रक्षा बंधन २०१७

लक्ष्मी जयपोल

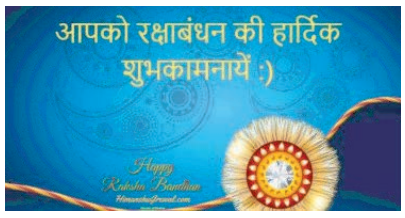

अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधने के लिए हर बहन रक्षा बंधन के दिन का इंतज़ार करती है। श्रावण मास की पूर्णिमा को यह पर्व मनाया जाता है । इस पर्व को मनाने के पीछे कहानियाँ हैं। यदि इसकी शुरुआत के बारे में देखें तो यह भाई-बहन का त्योहार नहीं, बल्कि विजय-प्राप्ति के लिए रक्षा बंधन है।

वर्तमान में यह त्योहार बहन-भाई के प्यार का पर्याय बन चुका है, कहा जा सकता है कि यह भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को और गहरा करने वाला पर्व है । एक ओर जहाँ भाई को अपने दायित्व निभाने का वचन देता है, वहाँ दूसरी ओर बहन भी भाई की लंबी उम्र के लिये उपवास रखती है। इस दिन भाई की कलाई पर जो राखी बहन बाँधती है वह सिर्फ़ रेशम की डोर या धागा मात्र नहीं होता, बल्कि वह बहन-भाई के अटूट और पवित्र प्रेम का बंधन और रक्षा पोटली जैसी शक्ति भी उस साधारण से नज़र आने वाले धागे में निहित होती है।

श्रावण मास की पूर्णिमा को एक ऐसा पर्व मनाया जाता है, जिसमें पूरे देश के भाई-बहनों का आपसी प्यार दिखाई देता है। भाई-बहन के प्यार, स्नेह को दर्शाते इस त्योहार की परंपरा आज लगभग हर धर्म में मनाई जाती है । धर्म-मज़हब से परे यह त्योहार भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है। किसी भी रिश्ते की मज़बूती की बुनियाद होता है विश्वास और यही विश्वास एक बहन अपने भाई पर रखती है जब वह इस पर्व के दिन भाई की कलाई पर एक धागा जिसे राखी कहते हैं, बाँधती है। अपने हाथ में राखी बँधवाकर भाई यह प्रतिज्ञा करता है कि वह अपनी बहन की सदैव रक्षा करेगा, चाहे परिस्थिति कितनी ही विषम क्यों न हो। राखी का धागा केवल रक्षा ही नहीं, बल्कि वह प्रेम और निष्ठा से दिलों को भी जोड़ता है।

इस दिन का महत्व इतना अधिक है कि यदि कोई बहन अपने भाई से इस दिन मिल नहीं पाती तो भी डाक द्वारा उसे राखी अवश्य भेजती है। रक्षा बंधन से जुड़ीं कई ऐसी कथाएँ हैं जिनमें राखी बाँधने वाली बहन नहीं बल्कि पत्नी या ब्राह्मण भी हैं । क्योंकि यह सूत्र, यह धागा एक रक्षासूत्र होता है।

एक कथा के अनुसार ग्रीक नरेश महान सिकंदर की पत्नी ने सिकंदर के शत्रु पुरुराज की कलाई में राखी बाँधी थी ताकि युद्ध में उनके पति की रक्षा हो सके और ऐसा हुआ भी, युद्ध के दौरान कई अवसर ऐसे आए जिनमें पुरुराज ने जब भी सिकंदर पर प्राण घातक प्रहार करना चाहा, तब अपनी कलाई पर बँधी राखी देख उसने सिकंदर को प्राणदान दिया ।

महाभारतकाल में जब श्री कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया था, तो उस समय उनकी उँगली कट गई थी। श्री कृष्ण की उँगली से रक्त बहता देख द्रौपदी ने अपनी साड़ी का पल्ला फाड़कर उनकी उँगली पर बाँध दिया था। वह साड़ी का एक टुकड़ा किसी रक्षासूत्र से कम नहीं था । अतः श्री कृष्ण ने द्रौपदी को सदैव उसकी रक्षा करने का वचन दिया और जब आगे जाकर भरी सभा में दुःशासन द्रौपदी का चीर-हरण कर रहा था और पांडव और अन्य सभी उनकी सहायता नहीं कर पा रहे थे, तब श्री कृष्ण ने द्रौपदी की लाज राखी और अपना वचन पूर्ण किया ।

इस वर्ष २०१७ में रक्षा बंधन का पवित्र त्योहार ७ अगस्त को मनाया जाएगा ।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम,आर्य भूषण*
(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

ARYA SABHA MAURITIUS

TENDER NOTICE

SALE OF MOTOR VEHICLES

Offers are invited in sealed envelopes for the purchase of
- **Toyota Hiace 3706 NV 03, 15-seater vehicle**
- **Toyota Corolla (Autovan) 1875 AP 99, Station Wagon**

Tenders should be made in sealed envelopes, bearing reference number "3706 NV 03" and "1875 AP 99" respectively and addressed to :

The Secretary
Arya Sabha Mauritius
1 Maharshi Dayanand Street
Port Louis

Closing date for submission of tenders: Saturday 12 August 2017 by 12.00 hrs.
Tenders received after the prescribed date will be rejected.

Interested parties are invited to contact the Secretary on 212 2730 or 208 7504, during office hours, for an appointment to view the vehicles, which will be sold on "AS IS AND WHERE IS" basis.

All those who have submitted their offer will be allowed to attend the opening of bids on 15th August 2017 at 1.00 p.m. in the boardroom

Arya Sabha Mauritius does not bind itself to accept any offer nor will it assign any reason for the rejection or non-acceptance of any offer.

श्री सत्यदेव प्रीतम : एक यशस्वी वक्ता

श्रीमती शांति मोहाबीर, एम.ए., पी.एच.डी.

इस वर्ष श्रावणी उत्सव का शुभारंभ रविवार ९ जुलाई २०१७ को आर्यसभा मॉरीशस के भवन में बहुकुण्डीय यज्ञ से हुआ। उसमें मुझे सपरिवार भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री सत्यदेव प्रीतम कर रहे थे। उस दिन उनका जन्मदिवस था। ९ जुलाई १९३९ में उनका जन्म हुआ है और अब वे ७८ वर्ष के हैं। मुझे याद था। बहुत चाहकर भी मैं उन्हें अपनी शुभकामना नहीं दे पायी। कभी उनकी व्यस्तता आड़े आ जाती थी तो कभी मेरी झिझक मुझे टोक देती थी।

उस दिन चूँकि मैं उनके काफ़ी समीप बैठी हुई थी, तो उनके हाव-भाव को निकट से देखने का मुझे अच्छा मौका मिला। उनकी बोलने की शैली आदतानुसार सरल व सहज थी। कभी-कभी रुककर, अपनी दृष्टि को भवन का निरीक्षण करवाते हुए, गहराई से सोचते हुए, सटीक शब्दों का चुनाव करते हुए अपनी बात कहते थे। भाषा पर उनका अधिकार और उनकी वाणी की प्रभावोत्पादकता ने मुझे अतीत की पगडंडियों में गमन करने पर विवश कर दिया। वे पगडंडियाँ मुझे पैंतीस वर्ष पूर्व ले गईं। एकाएक सारी स्मृतियाँ ताज़ा हो गईं । किशोरावस्था की दहलीज़ पर मैंने अभी-अभी कदम रखा था। मेरे पूज्य गुरु-स्वामी दिव्यानंद जी मॉरीशस भर में महायज्ञ का आयोजन करवाया करते थे। उनके साथ मैं और मेरी सहेली आनती अनेकों महापुरुषों के यहाँ जाया करती थीं। तभी से मैं श्री सत्यदेव प्रीतम से परिचित हूँ।

जुब्रैय गाँव में हर वर्ष दो बार महायज्ञ होता था। जुब्रैय आर्यसमाज में तीन दिन और वेद भवन में नौ दिन यजुर्वेद पारायण संपन्न किया जाता था। उन दिनों भारी संख्या में श्रद्धालु सपरिवार जुटते थे। यज्ञवेदी के चौकोणों में साधु-संन्यासी तथा वेदपाठ करने वाले पुरोहित विराजते थे। यज्ञब्रह्मा स्वामी दिव्यानंद जी महाराज हुआ करते थे। पुरुष यजमान सफ़ेद कमीज़ तथा धोती पहने होते थे और स्त्रियाँ पीली साड़ी पहने होती थीं। विवाहित स्त्रियों के सिर पर पल्लू हुआ करता था। यज्ञ के पश्चात् वक्ताओं के प्रभावशाली भाषण होते थे।

मेरा सबसे प्रिय वक्ता श्री सत्यदेव प्रीतम थे। उनको सुनने के लिए मैं और मेरे मित्र उत्सुक रहते थे। उनका भाषण बोझिल नहीं होता था। हमारे उत्साह को बरकरार रखने के लिए वे बीच-बीच में हमसे प्रश्न कर बैठते थे। कभी-कभी कुछ ऐसा कह देते थे कि हम खिल-खिलाकर हँसते थे। उनके भाषण के अंत में हम लोग खूब ताली बजाकर अपना हर्ष ज़ाहिर करते थे।

पैंतीस वर्ष पूर्व और आज के सत्यदेव प्रीतम में अधिक परिवर्तन नहीं आया है। वे तब भी युवकों के दिल के धड़कन थे, आज भी हैं। इन्हें बोलते सुनती थी तो मेरा किशोर मन मृग-स्वप्नों की हरीतिमा में छलाँग भरने लगता था। बड़ा होकर मुझे भी इन्हीं की तरह बनना था। स्थानों तथा लोगों के नाम-तिथियों के साथ पूरे आत्मविश्वास से मैं भी उद्धृत कर पाऊँ, ऐसी मेरी उत्कट इच्छा होती थी।

श्री सत्यदेव प्रीतम एक बहुमुखी व्यक्तित्व हैं। जीवन के वैविध्य में इन्होंने नूतन रंगों और उल्लासों को सजीव किया है। इनके नाना-नानी, दादा-दादी सभी वैदिक धर्म के अनुयायी थे। एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का स्वामी होना इनके लिए स्वाभाविक है। ये सदैव वैदिक-पथ के यात्री बने रहे। इन्होंने गुणों को कभी तिलांजलि न दी और अवगुणों को अपने आस-पास फटकने नहीं दिया।

श्री सत्यदेव प्रीतम एक कुशल शिक्षक, एक लक्ष्यनिष्ठ पत्रकार, एक सिद्धहस्त संपादक, एक निर्भीक वक्ता तथा एक जागरूक लेखक हैं। स्वाध्यायशील होने के कारण इनका ज्ञान विविध ज्ञान-रत्नों से आलोकित है। विश्वभर के साहित्य-सिंधु में तैरना, उतरना, बैठना इन्हें विशेष रूप से रुचिकर है। ज्ञान-विस्तार को मान्यता देना इनके जीवन का साध्य है। ये गति को जीवन का लक्ष्य और ठहर जाने को मृत्यु का द्योतक स्वीकारते हैं। जीवन के रंगों, तालों के वैविध्य में इन्हें आनंद-प्राप्ति होती है। इनके अंतःकरण में आर्य जाति के उद्धार से संबंधित सतत चिंतन चलता रहता है।

Raksha Bandhan

Sookraj Bissessur, B.A. (Hons)

The Raksha Bandhan symbolizes the profundity of the true bond of love, and affection which exists between brothers and sisters. This festival is indeed deeper than any ocean.

The festival of Raksha Bandhan is celebrated in India, Mauritius and various parts of the world with immense love, huge gusto and profound affection. This important festival of brothers and sisters will be celebrated on Monday 7 August with a great artistic and spiritual dimension. On the full moon of the moth of Shravan, sisters tie this precious thread, called 'Raksha Sutra' or 'Rakhi' on the wrist of the brother with the view to protect the culture (sanskriti) and Dharma (duty) of brothers and sisters.

It is also opportunity for the brother to shower his love to the sister by offering her gifts and bless her, so that she may always live in peace, harmony, comfort and happiness. Raksha Bandhan also teaches us that respectfulness should not reside only in his words, but also in his deeds.

The ultimate importance of this sublime festival resides in the fact that when sisters face problems, brothers consider it their duty to support and protect their sisters by providing them with the essential required love, solace, comfort and happiness of life.

Maharshi Dayanand Saraswati has so beautifully penned on women: "In the hearth and homes, where women are given due respect, there resides - Deity."

सम्पादक जी,

सादर नमस्ते ।

विदित हो कि ४ जुलाई से १५ जुलाई २०१७ के आर्योदय के नं० ३६८ में 'मृत्युञ्जय' शीर्षक नाम से एक लेख छपा है। इस लेख के संबंध में भारत से आए हुए, एक आचार्य ने मेरा ध्यानाकृष्ट किया और कहा कि इसमें गलत अर्थ छपा हुआ है। इस कथन की पुष्टि के लिए जब मैं घर पहुँचा तब मैंने आर्योदय की वह प्रति ढूँढी, उस लेख को पढ़ा। मैंने देखा कि 'पतिवेदनम्' के अर्थ में लिखा गया है – **"लगता है कि कोई कन्या त्र्यम्बकं परमात्मा, आचार्य या पिता से विनती कर रही है कि मुझे पितृकुल के बन्धन से मुक्त करके पतिकुल में बाँध दें, क्योंकि पतिकुल में जाने के लिए वचनबद्ध हूँ।"**

इसके पश्चात् मैंने यजुर्वेद भाषा-भाष्य में मन्त्र का अर्थ पढ़ा, जो कि लेख में बताये गये अर्थ से बिल्कुल भिन्न है। सम्भव है कि लेखक का अपना विचार हो, अपनी मान्यता हो। परन्तु इस मंत्र के अन्तर्गत कहीं भी, किसी भी दृष्टि से 'पतिवेदनम्' के अर्थ में 'कन्या' का संकेत नहीं मिलता है।

इस मंत्र का देवता (विषय) है – 'रुद्र'। 'रुद्र' का अर्थ है 'रुलानेवाला'। ग्यारह रुद्र (१० प्राण और १ जीवात्मा) जब शरीर से निकलते हैं, तब मृतक के सभी परिजन दुखी होकर रोने लगते हैं। इस मंत्र में भक्त रुद्ररूप परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना उपासना करता है कि वह 'ऊर्वारुकमिव' – खरबूजे की तरह पूरी आयु जीकर इस शरीर से अलग होवे। जैसे खरबूजा पककर अमृत के समान मीठा हो जाता है और खानेवाले उसके स्वाद का पूरा आनन्द लेते हैं, वैसे ही हम सत्यकर्म करते हुए यशस्वी, परोपकारी बनें और इस शरीर से मुक्त होवें ।

अतः इस दृष्टि से इस मंत्र का विषय जब परमात्मा है तो इसमें साध्य-साधना और साधक की ही चर्चा उचित लगती है। यहाँ कन्या व वर का उल्लेख करना सम्यक् नहीं लगता। 'त्र्यम्बकम्' का अर्थ होता है – ईश्वर का रुद्ररूप और 'पतिवेदनम्' का अर्थ 'रक्षा करने वाले स्वामी' लगाना ही उचित है। अन्य अर्थ लगाकर लोगों को गलत दिशा की ओर ले जाने की सम्भावना हो सकती है। इसलिए मंत्र का अर्थ लगाते समय हमें सावधानी बरतने की आवश्यकता है। मन्त्र का भावार्थ उस मन्त्र के देवता को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए।

आर्य - शुभ चिन्तक

सम्पादकीय नोट – *रचनाकार स्वयं अपनी रचना का उत्तरदायी है ।*

ARYA SABHA MAURITIUS

SUBJECT : INVITATION FOR INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMELAN 2017 - MYANMAR (BURMA)

Namastey!!

As you all are aware that Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha (SAPS) has been organizing International Arya Maha Sammelans every year and achieved huge success in all the countries across US (Chicago), Holland, Mauritius, Suriname, Bangkok, Singapore, South Africa, Australia, Nepal, etc.

In the series of International Arya Maha Sammelans over the decades, we are glad to inform you that this year the International Arya Maha Sammelan 2017 is going to be held in Mandalay, Myanmar.

Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha (SAPS) on behalf of Arya Pratinidhi Sabha Myanmar is honoured to invite you for International Arya Maha Sammelan 2017 " on October 6-7-8, 2017 to be held at Shri Ambika Mandir Parisar, Mandalay, Myanmar.

It is pertinent to note that Myanmar is a country with Arya Samaj philosophy and large number of followers of Maharishi Dayanand Saraswati for more than 100 years. It is a country where many of our revolutionaries who had emerged as great leaders of India namely Lala Lajpat Rai, Bal Gangadhar Tilak, Netaji Subhash Chander Bose etc., were kept confined in Mandalay Prison during British rule.

You can find more information with regards to registration form and Myanmar Sammelan details via SAPS official website www.thearyasamaj.org. **Please note that any information sought with regards to the Maha Sammelan can be gathered from Myanmar Sabha contacts below :**

1. **Mr. Ashok Khetarpal (President, Myanmar Sabha) +9592010129 – Email ashokkht@gmail.com**
2. **Mr. Pradeep Gulati (Vice President) Whatsup +959975466779 Phone +959952005356.**
3. **Ashwin Arora (Joint Secretary) Phone +9592042042**

Mr. Vinay Arya 09958174441- Email aryasabha@yahoo.com

The registration is necessary for all the participants for betterment of the system and convenience. We request you to complete the registration process on as soon as possible and inform at the earliest.

It would be great honor to us if you join us in MahaSammelan with your members and dignitaries of Arya Samaj connected to esteemed Arya Pratinidhi Sabha of your country. We look forward for your blessings and directions to lead the Arya Samaj movement in Myanmar.

Thanks and regards,

Suresh Chander Arya
(President)
9824072509

Prakash Arya
(Secretary)
9826655117

Note : ***1. Registration is free of cost.***
2. Food will be provided from (Night) October 5 till 8 October, 2017 (Night)

15- Hanuman Road, New Delhi-1100001, Phone : 91-11-23360150, 23365959
Email : aryasabha@yahoo.comweb. :http://www.thearyasamaj.org

For more details please contact Mr Satyadeo Peerthum, (R) 6985117, (M) 52573817

Shravani 2017

Les connaissances des Védas

La seule et unique révélation : Les Védas constituent la seule et unique révélation, faisant autorité sur le thème de la spiritualité ou la réalité spirituelle. Mondialement reconnus comme « *les écritures supra-saintes », c'est-à-dire les premiers textes de l'humanité traitant la spiritualité, ils forment aussi le plus grand dépôt de connaissances.*

Shruti : Ils sont appelés « *shruti* » car la transmission de ce savoir était de bouche à l'oreille pendant des millénaires. Cette tradition de la transmission orale des hymnes (versets) Védiques a été proclamée comme *'Patrimoine Culturel Immatériel de l'humanité'* par l'UNESCO en 2008.

L'âge des Védas : Une recherche sur l'internet révèle une fixation initiale autour de 1,500 ans av. J.-C. (*B.C.*). L'archéologie a rattaché l'origine des Védas à la culture Mohenjo-Daro, environ 4,000 ans av. J.-C. Cela a été révisé à 10,000 ans av. J.-C. Et la tradition orale des dates (*tithi*) remonte la révélation à ***1,960, 853,118*** ans de cela.

La révélation à qui ? Dieu avait choisi les quatre âmes les plus méritoires et les ont donné le savoir des Védas durant la phase la plus élevé de la méditation (Samādhi) :
(i) RigVéda au sage (Rishi) Agni ;
(ii) YajurVéda au sage Vayu ;
(iii) SamaVéda au sage Aditya ; et
(iv) AtharvaVéda aux sage Anguir.

La source de toutes les vraies connaissances : En un mot, les Védas signifient les vraies connaissances (*satya vidyā).* Ils nous montrent la voie :
*(*1.i) mondaine *(aparā vidyā) et* (1.ii) spirituelle (*parā vidyā*) ;
(2.i) le *vyavahāra jnāna* (les manières ou la façon d'agir et de faire *…life skills*) et (2.ii) le *paramārtha jnāna* qui mène vers but ultime de la vie (le salut, le bonheur éternel ou *moksha*).

Les Védas sont aussi connus comme ***trayi vidy***ā pour les trois types de connaissances (*jnāna*), les préceptes sur notre façon d'agir (*karma*) et la méditation/ la dévotion (*upāsnā*).

Sous l'appellation de ***chattvaro vidy*** on ajoute la logique / les sciences (*vijnāna*) à *jnāna, karma* et *upāsnā*. Les Védas sont ainsi répartis comme suit:
(i) RigVéda - *jnāna kānda*, axé principalement sur les connaissances ;
(ii) YajurVéda - *karma kānda*, les enseignements traitent surtout la façon d'agir et de faire ;
(iii) SamaVéda - *upāsnā kānda*, les préceptes couvrent spécialement la méditation / la dévotion ;
(iv) AtharvaVéda - *vijnāna kānda*, le sujet concerne particulièrement les sciences de la nature, les sciences sociales, etc. et de surcroît la logique qui nous permet de relier le savoir, les actions et la prière / la méditation / la dévotion afin de vivre la réalité spirituelle en continu, et intégrer nos pensées, paroles et pratiques (*manasā, vāchā* et *karmanā*) à la méditation / la dévotion.

Les sages ont par la suite codifié le savoir des Védas en ouvrages, entre autres : *Ayur Veda* - la santé, une approche holistique de la médecine pour le bien être; *Dhanur Veda* - les sciences de la protection, la défense, tactique et stratégie militaire ; *Gandharva Veda* - la musique, un art et une activité combinant sons et silences au cours du temps où les ingrédients principaux sont le rythme (façon de combiner les sons dans le temps), la hauteur (combinaison dans les fréquences), les nuances et le timbre ; *Shilpa Vidyā* - l'architecture, l'ingénierie, la mécanique, inventions et maitrise des matières parmi lesquels l'espace, le vent, l'énergie, l'eau, la terre… ; *Shikshā* - l'articulation et la prononciation ; *Chhanda* - le rythme, le son, l'intonation ou l'emphase dans une langue ; *Vyākarana* - la grammaire ; *Nirukta* - l'étymologie / la genèse / l'origine des mots ; *Jyotisha* - l'astronomie ; *Kalpa* -le rituel, sanskras et autres cérémonies ; Upanishads - la spiritualité ; Darshan *Shāstras* - la philosophie ; *Griha Sutras* -le rituel, sanskāras ; *Manusmriti* - les lois universelles ; *Artha Shāstra* -l'économie ; *Niti* - la politique.

Parmi les œuvres de Maharishi Dayanand Sarasvati on retrouve le *RigVédādi-Bhāshya-Bhumikā* ; un livre écrit dans le but d'introduire les enseignements des Védas à tous …aux personnes générales. L'auteur a *mis les points sur les* i ; il explique clairement la métnodologie pour le vrai sens des mots ; il avait aussi examiné les fausses conceptions et a osé les préciser en se référant aux Védas lui-même, Brahmana Granthas, Darshan Shastras, Upanishads, *arsha granthas* œuvres authentiques des rishis (sages) et surtout la science de l'Étymologie (Nirukta). Il réfute ainsi les diverses idées fausses qu'avaient créé les interprétations des Védas propagées par divers personnes, comme Sayana, Mahidhara, Wilson, Ralph T.H. Griffith, Max Muller.

Le *RigVédādi-Bhāshya-Bhumikā* nous donne un aperçu sur plusieurs sujets contenu dans les Védas :
» Le pourquoi, l'origine et l'éternité du savoir des Védas ;
» La philosophie de la trinité : dieu (*Ishvara*), les âmes (*Jeeva*) et la nature (*Prakriti* ou les matières primordiales) ;
» Le Yoga - l'homme qui s'inspire de la sagesse divine à travers une bonne hygiène de vie (propreté externe ou physique / sociale et propreté intérieure ou mentale / morale), la méditation, les prières …pour réaliser (i) le potentiel inné de soi et (ii) la communion de son esprit et âme avec dieu, sans quoi le rituel prendra le dessus sur la spiritualité ;
» La spiritualité en tant que réalité spirituelle où on vit la vertu (dharma) en continu (24/7 x 365, pendant les vingt-quatre heures de chaque jour, les sept jours de chaque semaine et les trois cent soixante-cinq jours de chaque année ;
» Les œuvres ou textes qui font office d'autorité et de référence dans les différents aspects de la vie ;
» La méthodologie de l'apprentissage, la grammaire, l'étymologie ou formation des mots et trouver les sens des mots selon le mot d'origine (*dhatu* ou *root word*) ;
» La cosmogonie ou science traitant de la formation des planètes et de l'univers, la révolution, l'attraction et la force de gravité des planètes qui maintient l'équilibre des constellations et de l'univers ;
» Les mathématiques, les sciences de la communication et autres sciences de la nature y compris la construction des engins permettant les voyages sur terre, sur et sous l'eau, dans l'espace ;
» L'approche holistique de la médecine ou les sciences pour un corps, un esprit et une âme sain ;
» Les sciences sociales (vivre au sein d'une famille, de la société, d'une communauté, d'un pays et du monde) ;
» La renaissance et l'émancipation (*moksha* ou libération du cycle de la naissance et de la mort) ;
» Le leadership / la bonne gouvernance, les devoirs / responsabilités de chacun et surtout les chefs au sein des familles, des associations, du gouvernement, etc. ;
» Les différents phases de la vie (*brahmacharya* ou l'apprentissage ; *grihastha* ou la vie familiale au sein du mariage, *vānaprastha* ou la retraite et sannyasa ou la renonciation) ;
» Les castes qui consistent *à priori* de la division du travail, et défini selon le caractère (*guna*), le travail (*karma*) et les aptitudes (*svabhava*) de la personne ;
» Les cinq devoirs indispensables de l'homme;
» Les règles de l'engagement (déclaration où on s'engage à faire des choses, observer les termes de cet engagement).

Ce mois de Shrvan augure une nouvelle ère dans notre vie : l'occasion …d'acquérir les connaissances correctes (shuddha jnaana) …d'adopter la bonne façon de faire et d'agir, de bonnes pensées, paroles et pratiques ou actions (shuddha karma) …de pratiquer la vraie méditation, la dévotion où on s'applique à 100% physiquement et mentalement (purushārtha) ; la bonne façon de prier (shuddha upāsnā) …d'adopter les valeurs universelles, énoncées dans les Védas ; …de se transformer en être humain …de maîtriser son esprit et ses émotions afin de se positionner comme les agents du changement pour une société meilleure, plus juste et équitable …de progresser vers le développement holistique où constituer les ensembles donne des résultats supérieurs à la somme des parties, bref une évolution créatrice.

Yogi Bramdeo Mokoonlall

1st Anniversary Celebrations of Rodrigues Arya Samaj memorised

by Dr Indradev Bholah Indranath, P.B.H., Sahityalankar

"Society is no comfort to one not sociable"
Shakespeare

Rodrigues Arya Samaj commemorated its first anniversary on Saturday 01 July 2017. A delegation of 22 persons from Arya Samajs in Mauritius attended the celebrations. The dignitaries from Mauritius included Mr Satyadeo Peerthum, General Secretary of the Sabha, Dr. Jaychand Lallbeeharry, Vice-President and Mrs Lallbeeharry, Mr Raj Sobrun, Manager of the Sabha and Dr. Indradev Bholah Indranath, Secretary of the Press Samiti. After an hour and thirty minutes flight we reached Plaine Corail Airport, Rodrigues where the President of Rodrigues Arya Samaj Mr Ramnick Cheetoo warmly greeted us. A contract bus took us to Le Flamboyant Hotel Port Mathurin.

After a short rest we accompanied Mr Cheetoo to the premises of the Arya Samaj, Port Mathurin. Hawan was performed by Pt. Ravindra Payedegadu. Mr Satyadeo Peerthum thanked Mr Cheetoo for the initiative, establishing the Arya Samaj in Rodrigues. He talked on the essence of Vedic mantras and their inspiring influence. The Arya Samaj in Port Mathurin is located in a dwelling with a vast yard where a Mandir will be built in the years to come. The Hindi Speaking Union also has opened a branch over there.

Setting up an Arya Samaj in Rodrigues is a plus for disseminating the Vedic principles in an island largely populated by the Christians. The actual Vice-President and the Assistant Treasurer of Rodrigues Arya Samaj are from the Christian community. 50 students also learn Hindi in the Arya Samaj, taught by Mr Ramnik Cheetoo. The Sabha is planning to conduct the year end examinations and award certificates to encourage more people to learn Hindi.

Rodrigues is a calm and beautiful island with imposing sceneries. We seized of the opportunity for site visits. Caverne Patate is a wonder, an amazing creation of God. Tourists make it a must to visit that cave.

In the evening we gathered in the hall of the hotel. Sandhya preceded a cultural programme (music bhajan and talks) which impressed all present. Mrs. Sunita Bhurruth, a sitar vadak, vocalist and teacher of yoga, sang a classical song in melodious voice with sitar vadan.

Through a Power Point Presentation, Mr. Raj Sobrun, Manager of the Sabha made an overview of the main activities of Arya Sabha Mauritius, giving a vivid portrait of the works done in the field of prevocational, vocational, primary, secondary and tertiary education, social service at the Residential Care Homes, caring for the needy.

The guest of honour for the occasion was Hon. Prithvirajsingh Roopun, Minister of Arts and Culture. He spoke about the universal values upheld by the Arya Samaj, its excellent work in the field of education and social service, caring for the elderly and needy. Every language has its power. French language has its impact among the students. Learning Hindi or more languages has its advantage for instance four languages are required in China to pursue studies in medicine.

Mr Satyadeo Peerthum said that the establishment of the Arya Samaj in Rodrigues will bring unity and uplift the welfare of all. Swami Dayanand, founder of Arya Samaj was a far-sighted person. In spite of his Gujarati origin he has written all his books in Hindi. He used to preach in Sanskrit Language. During a visit to Culcutta Swamiji was requested to preach in Hindi which was better understood by the common people. Thereafter he spoke and propagated Hindi widely. In 1954 the Arya Samajists in Mauritius urged people to sign their names in Hindi and obtain the right to vote. The aftermath was that from 100 the voters increased up to 77,000 and in the election only one white candidate was elected.

Dr Jaychand Lallbeeharry spoke about the contribution of Arya Sabha to propagate Hindi since and human values. The Hindi text books prepared by the Sabha focus on values.

Dr Indradev Bholah Indranath, reputed Hindi writer, donated several of his books and magazines to the Rodrigues Arya Samaj. The books were handed over by Hon. Roopun to Mr Ramnik Cheetoo and Mr Jean Louis Visette, respectively President and Vice President of Rodrigues Arya Samaj.

Mr Bissoon Mungroo, owner of Le Flamboyant hotel expressed his gratitude to the delegation and participants and hoped to see the Rodrigues Arya Samaj more involved in social work.

The ceremony ended at night with the vote of thanks by the President and the Vice President of Rodrigues Arya Samaj.

Satyārth Prakāsh Month at the Triolet Trois Boutiques Arya Samaj

Mitasha Ramoutar Chummun (Mrs)

During the month of June, known as the Satyārth Prakāsh Month, the teachings of the great book, written by Maharishi Dayanand Saraswati Ji, were read and taught all over the island. The Triolet Trois Boutiques Arya Samaj marked this occasion with great fervor. Several speakers graced the first three weeks by mind inspiring eloquent speeches. The last week was marked by a special function which was organized jointly by the Mauritius Arya Yuvak Sangh (MAYS) and the Triolet Arya Yuvak Sangh (TAYS).

It was a remarkable day where youngsters of the locality presented bhajans, speeches and poems to mark the month dedicated to the study of the Satyārth Prakāsh. The programme started with a speech by Dr Indrasen Inderjeet ji, the young and talented President of the Triolet Trois Boutiques Arya Samaj. The TAYS then presented a breathtaking bhajan, the Sangathan Sukta. The Secretary of the TAYS, Chandrasen Bhajan ji then delivered his speech where he elaborated on the living values imbibed in the Satyārth Prakāsh.

The Vice President of the MAYS, Bhushan Chummun ji, spoke on the second and third chapters of the Satyārth Prakāsh. He spoke on how students, teachers and educational institutions should be. He also spoke on the proliferation of drugs in our educational institutions. He highlighted that if students follow the path set by Swami Dayanand Ji, social evils like drugs, alcohol and cigarettes would have no place in our society.

The program ended with the vote of thanks and Shanti path.